This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः

मयरसतजभ्ननल्गसंमितंभ्रम
ति वाङ्मयंजगतीयस्य॥ सजयति
पिंगलनागः शिवप्रसादाद्विशुद्धम
तिः॥ त्रिगुरुं विद्धि मकारं लघ्वादि

॥१॥ समान्वितं यकाराख्यं॥ लघुमध्यमंतु
रेफं सकारमंते गुरुनिबद्धं॥ लघ्वंसं
हितकारं जकारमुभयोर्लघुं विजानी
यात्॥ आदिगुरुं च नकारं नकारमुरु
पैंगले त्रिलघुं॥ दीर्घसंयोगपरं

Acc. No. ~~1829~~ M-1810
Title - छन्दस्
Author - पिङ्गल
Date - ?
Subject - मंत्र
folio - 21
Xerox - 21

Checked 2012

K K S U LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1810
Dist. Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नहसन्तु॥ गन्तु॥ गंते॥ धादिपरः॥१॥
होनौ सः॥ ग्लो॥ ब्धोवसइति॥२॥
छंदः॥ गायत्री॥ दैव्येकं॥ आसु
रीपंचदश॥ प्राजापत्याष्टौ॥ य
जुषांषट्॥ साम्नांद्विः॥ ऋचांत्रिः॥

मंदरवावर्णिषण्मात्रमुवाचपिंगलः
२॥ सूत्रं॥ छंदोवगेपदार्थवत्सयहे २२
तोष्यूशास्त्रादौ॥१॥ धीश्रीस्त्रीम्॥
वरासायू॥ कागुहार॥ वसुधास॥
सातेकन्॥ कदासज॥ किंवदन्॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तथास्वरं व्यंजनांतं मूर्भांतं ।। सा
नुस्वारं च गुरुं क्वचिद्दवसाने पि
लघ्वं सं ।। पादिमध्यावसानेषु य
रतायां। तिलावांन्त जसा गौरवं यां
ति मनौ तु गुरुलाघवं ।। त्रिविरा

द्वौ द्वौ साम्नां वर्द्धते ।। त्री ॰ स्त्रीनृचां:
चतुरश्च तुरः प्राजापत्यां यः ।। ए
३।। केकं शे षे ।। जत्वादा सुरी ।। तान्नु ३।।
ष्णिगनुष्टुप्बृहती पंक्ति त्रिष्टुप
जगत्यः ।। तिस्रः स्तिस्रः सनाम्न्य

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४॥ आद्यं चतुष्पाद्‌दतुभिः॥ कश्चि त्रिपाद्दि

भिः॥ सापाद निचृ[illegible]॥ षट्कसप्तका

यौ मध्ये द्वावतिपाद निचृत्॥ द्वौ

नवकौ षट्कस्य नागी॥ विपरीतावा

राही॥ षट्कसप्तकाष्टकैर्वर्द्धमाना ४॥

विपरीताप्रतिष्ठा॥ तृतीयं द्विपा॥ जा

गतगायत्राभ्यां॥ त्रिपाद्वैष्टुभैः॥ उ

ष्णिग्गायत्रौ जागतस्य॥ ककुम्मध्ये

चेदंत्यः॥ पुरउष्णिक् पुरः॥ ५॥ =

परोष्णिक् परः॥ चतुष्पाद्दतुभिः॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ऐ कै का आस्य:॥ आग्य जुषामार्व्यइ
ति॥ ६॥ पदः इत्यादि पूरणः॥ गाय
त्र्या व सव:॥ जगत्या आदित्या:॥
विराजो दिश:॥ विष्णुनो रुद्रा:॥
एक द्वि त्रि चतुष्पाद् त्कं पादं॥ =

अनुष्टुप् गायत्रैः॥ त्रिपाद्कच्चिज्जाम
त गायत्र्याश्चांच॥ मध्ये तेंच॥ बृह
६॥ तीजागतस्त्रयश्च गायत्रा:॥ पथ्या
पूर्वश्चेनवीय:॥ न्यंकुसारिणी द्वि
तीय:॥ स्कंधो ग्रीवी क्रौष्टुके॥ उरो

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पदपंक्तिः पंच ॥ चतुष्कषट्कौ त्र्यश्च ॥

पथ्यापंच त्रिगायत्रैः ॥ जगतीषड्भिः ॥

एकेन त्रिष्टुप् ज्योतिष्मती ॥ तथाज

गती ॥ पुरस्ताज्ज्योतिः प्रथमेन ॥ म

ध्येज्योतिर्मध्येमेन ॥ उपरिष्टाज्ज्यो

हि॥ वीच्चेद्युजौ सततः पंक्तिः ॥ विपरीतौ च ॥

आस्तारपंक्तिः परतः ॥ १ ॥ प्रस्तार हि॥

पंक्तिः पुरतः ॥ विष्टारपंक्तिरंतः ॥

संस्तारपंक्तिर्बहिः ॥ अक्षरपंक्तिः

पंचकाश्चत्वारः ॥ दावप्यल्पशः ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

बृहतीयास्कन्स्य ॥ उपरिष्टाद्बृहत्यंते ॥
पुरस्ताद्बृहतीपुरः ॥ कचिन्नवकाश्च
त्वारः ॥ वैराजौ गायत्रौ च ॥ त्रिभिर्ज
गतै र्महाबृहती ॥ सतोबृहती तांडि
नः ॥ पंक्तिर्जगतौ गायत्रौ च ॥ पू

त्रिंस्ष्येन ॥ एकस्मिन्पंचके छंदः शो
७॥ कुमतीच्छकुमती ॥ त्रिपादनिष्टम ७॥
ध्यापिपीलिकमध्या ॥ विपरीता यव
मध्या ॥ ऊनाधिके नैकेन ॥ निचृद्भु
रिजौ ॥ द्वाभ्यां विराट्स्वराजौ ॥ ८

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

८॥ गद्गृष्णनीललोहितगौरावर्णाः॥ आ ८॥
ग्निवेश्यकाश्यपगौतमांगिरसत्त्रागीव
कौशिकवासिष्ठानिगोत्राणि॥ शामा
न्यतिच्छंदांसि॥ रोच्चनान्नात्कृतवर्णा
न्यनुक्तानां कामतो वर्णोइति॥ ७॥

च्चतुःशतमुत्कृतिः॥ चतुरश्चतुर
ष्टौस्यजेदुत्कृते॥ तान्यतिसंख्याप्र
त्ययःकृतिः॥ त्रकृसाचोपसंविवर्जि
तः॥ ध्रुस्यब्धिशाकरीजगत्सः॥ पृ
थक्पृथक्पूर्वेन एतान्यवेषां॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

९

द्वितीयं द्वितीयमतितः॥ तनौल्लौकिमं॥
आत्रैळुमाच्चयदार्षं॥ पादस्यतुर्ली
गः॥ यथावृत्तसमौत्रिवी॥ लः स
मुद्रागणः॥ गौगंनमध्यादिल्लैस्य॥
स्यूराधैर्चार्म्मीपंजिबायुडुल्ल॥

व्यादितः संदिग्घे॥ द्वि॥ देवतादितस्य॥
अग्निः सवितासोमोबृहस्पतिर्मित्रा
वरुणाविंद्रोविश्चेदेवौता॥ स्वराः
षड्जऋषभगांधारमंध्यमपंचम
धैवतानिषादाः॥ सितसारंगपिरौ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पष्ठोज॥ न्लौ बा॥ न्लौ चेत्सदं द्वितीया
दिः॥ सप्तमः॥ प्रथमादिः॥ अंत्ये पं
चमः॥ ॥षष्ठश्चल्॥ त्रिषु गणेषु
पादः पथ्याद्ये च॥ विपुलान्या॥ च
पला द्वितीया चतुर्थौ न्मध्येजौ॥

पूर्वे मुखपूर्वा॥ जघनपूर्वेतरा॥
१०॥ जघन्यो र्महाचपला॥ आर्याधः सम ॥१०॥
गीतिः॥ अंत्येसे नोपगीतिः॥ उक्त
मेलोद्गीतिः॥ अर्द्धे वसुसमार्या गी
तिः॥ वैतालीयं द्विस्वरा युक्पादे यु

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ग्व स र्वो ते र्न्तो:॥ गोपृच्छे द स्सिकं॥
आपात। ल्लिका न्गो ग॥ शे षे प रे लयु
दू: सांकं॥ षट्च्यामिस्त्रा युजि॥ पंच
मे न पू र्वः सा कं प्राच्य वृ त्तिः॥ अयुक्
तृती ये नो दी च्य वृ त्तिः॥ आभ्यां यु

ग पत्त्र वृ त कं॥ अयुक् चारुहासिनी॥
११॥ ॥१॥ युग प रां ति का॥ गं ता द्वि र्व सवे १४॥
मात्रा सम कल न व म:॥ द्वा द शो ष्य वा
न वा सि का॥ विश्लोकः पं च मा ष्ट मौ॥
चित्रा न व मम्य॥ पर युक्ते नोपचित्रा॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यश्च तुर्थी तू॥ पथ्यायुजोज्॥ विप
रीतैकीयांज पात्लायुजोज्॥ विपुला
युग्लः सप्तमः॥ सवित्रसैतवस्य॥
श्चौ त्तौच॥ भ्रतिपादं चतुर्वृध्याप
दश्चतुरूर्ध्वं॥ गावंतव्यापीडः॥११॥=

मं विषमं च॥ समंतावत्स्त्वः कृतमर्ध
समं विषमं च॥ राश्युनौं ग्लितिसमा १२७
१२॥ नि॥ ल्गिगितिप्र माणी॥ वितानमन्य
तू॥ पादस्यानुष्टुप् वक्तं॥ नप्रथमा
स्नौ॥ द्वितीयतृतीययोरश्च॥ वान्यतू॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

एमिः पादाकुलकं॥ गीत्यार्यो लः॥ वि
रवाविपर्यस्ताधी॥ लः पूर्वस्त्रैज्योतिः॥
गश्चे सौम्या॥ चूलिकैकोन्नविंशदे
से कत्रिंशदंसेकू॥ सा गये न न समा
लांग्ल इति॥१०॥ वृतं॥ समम र्धस

गावासौ चेत्स्यापीडः॥ प्रत्यापीडो गा
१३॥ वादौ च॥ त्रयमस्य विपर्यासे मंज १३॥
रीलवल्यं म नधाराः॥ उद्गतामे
कतस्जौ स्लौ न्सौ ज्गौ नजौ ज्लौ भ्सौ
स्जौ ग्॥ तृतीयस्य सौरन्नकैं नैं ज्गौ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नौ नगो ग्न जौ ज्यौ ।। वे ग व ती सौ स्गौ नौ
न्नौ ग्म् ।। नड वि राद् जौ गौ म्सौ ज्नौ ग्म् ।।
के तु म ती स्जौ स्गौ त्रौ न्नौ ग्म् ।। व्या रव्या ।।१५।।
१४।। न की । तौ ज्नौ ग्नौ ज्नौ ग्म् ।। वि प रीता रव्या
न की ज्तौ ज्नौ ग्तौ ज्नौ ग्म् ।। ह रिण प्लुता
सौ स्लौ ग्नौ न्नौ ।। अ प र व क्त्रं नौ लौ

न लितं नौ सौ ।। उ प स्थि तं प्रचु पि तं पृ
थ गा थ म्तौ ज्नौ गौ स्नौ ज्नौ ग्नौ स्नौ भौ
ज्यौ ।। व र्ध मा नं तृ ती ये नौ स्नौ न्सौ ।।
१७ शुद्ध विं कृ ष ध्या न्नौ नगौ ग्न जौ ज्यौ ।।
वे ग व ती सौ नज्या: ।। अर्द्धोउ प चि
त्र कं सौ स्लौ ग्नौ न्नौ ग्म् ।। द्रु त म ध्या

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रल्लिताञ्जोग॥ माणवकाक्रीडितकं
१२॥ त्तो लौ॥ चित्रपदा नभौ गौ॥ विद्युन्मा १२॥
ला मौ गौ॥ भुजगशिशुसृता नौ म॥
हलमुखी नौ स॥ शुद्धविराण्मसौ
जौ॥ एकरूप सोजौ ग॥ इंद्रवज्रा
तौ पणवो म्नौ यौ॥ रुक्मवती भमौ सो॥

गजौ ज्यौ पुष्पिताग्रा नौ र्यौ जौ ज्यौ ग॥
॥१२॥ यवमती जौ जौ त्रौ ज्यौ ग॥
त्रिरवै रवै कान्त्रिंशाद्दं सकृत्रिंशाद्दं
ते कूर॥ रवंजा महसयुजीति॥१३॥
यति॥ विदिंहः॥ तनुमध्या सो॥ कुमा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मयूरसारणी जौगौ॥ मत्ता म्भौ सौ॥
उपस्थिता नौ जौ॥ एकरूपं सो जौ गू॥
इंद्रवज्रा तौ जौ गू॥ उपेंद्रवज्रा ज्तौ
जौ गू॥ वाधंताबुपजातयः॥ दोधक
भौ भौ गू॥ शालिनी म्तौ तौ ग्समु
द्रऋषयः॥१४॥ वातोर्मी म्भौ तौ ग्ग॥

भ्रमरविलसितं म्भौ न्लौ गू॥ रथोद्ध
ता नौ ल्गौ गू॥ स्वागता नौ भौ गू॥ १६
१६ वृंता नौ सौ गू॥ श्येनी जौ लौ गू॥ ज
गती विवज्रा स्या ज्तौ ज्तौ॥ इंद्रवंशा तौ
ज्तौ॥ द्रुतविलंबितं नौ भ्रौ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

१७॥ विति ॥१८॥ प्रहर्षिणी म्नौ ज्रौ ग्स्त्रिदश
कौ ॥ रुचिरा ज्भौ स्जौ ग्स मुद्रनवकौ ॥ १८॥
मत्तमयूरा म्तौ य्सौ ग ॥ असंबधा म्तौ ॥
न्सौ गौ विंद्रियनवकौ ॥ अपराजिता
नौ र्सौ ल्गौ स्वररुषयः ॥ प्रहरणक

तौ ङ्कंसः ॥ पुटौ नौ म्यौ वसुसमुद्राः ॥
जलोद्धतगति ज्सौ ज्सौ रसर्त्तवः ॥ भु
जंगप्रयातं यः ॥ स्रग्विणी रः ॥ प्रमि
ताक्षरा स्जौ सौ ॥ वैश्वदेवी मौ यौ विं
द्रियऋषयः ॥ नवमालिनी ज्रौ भ्यौ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

लिता नौ य्यौ ल्लौ च ॥ वसंततिलका
ड्नौ जौ गौ ॥ सिंहोन्नता काश्यपस्य ॥
उद्धर्षिणी सैव नेस्य ॥ चंद्रावर्त्ती नौ
नौ स् ॥ मालान्तु नवकौ चेत् ॥ मणि
गुणनिकरो वसुऋषयः ॥ मालिनी

नौ म्यौ य् च ॥ ऋषन्नगजविलसितं
भ्नौ नौ न्नौ स्वरैर्नवकौ ॥ हरिणी न्सौ
१८॥ म्रौ स्लौ ग्ल ससमुद्रऋषयः ॥ पृ १८॥
थ्वी ज्सौ न्सौ य्लौ ग्वसुनवकौ ॥ वंश
पत्रपतितं भ्रौ न्भौ न्लौ ग्दिग्ऋषयः ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मंदाक्रांता म्भौ न्तौ तौ गग समुद्रर्तुस्व
राः॥ शिखरिणी य्मौ न्सौ भ्लौ ग ऋतुरु
द्राः॥ कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ न्यौ
या विंद्रियर्तुस्वराः॥ १६॥ शार्दूल
विक्रीडितं म्सौ ज्सौ तौ गादित्यऋषयः॥

सुवदना म्रौ भ्नौ य्भौ लौ स्वर ऋषि र
साः॥ ग्लितिवृत्तं॥ स्रग्धरा म्रौ भ्नौ यौ
१८॥ यत्रिः सप्तकाः॥ मंद्रकं भ्रौ न्रौ न्रौ १८
नौ दिग्गादित्याः॥ अश्वललितं जौ
न्जौ न्जौ न्लौ ग द्वादित्याः॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मन्नाकीऊ।मो न्नौ नो न्लौगव सु
पंच दश कौ॥ तन्वी न्वौ न्सौ न्वौ
न्यौ दिरा दिसाः॥ क्रौंच पद्दा न्मौ
स्त्रो नो नो ग्मू तें ड्रियावस्तूप
पः॥ न्तुजं म विजं न्नितं मो न्नौ

नो सैलौव सुरुद्द रूषयः॥ञ
प वाहको न्मौ नौ नो नौ गौ नव २॥
२॥ कन्नुरसें ड्रियाटि॥ दृंडको नोरः॥
त्रयमस्यंडवृष्टिप्र यातः॥ञ
न्यत्ररात मांडव्या प्यां॥ रोषप

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

स्रूपेस्नून्यं॥ द्विःस्नून्येनावदर्द्धेत
द्गुणितं॥ द्विघ्न्यूनं॥ तदंतानां॥ २४॥
२४॥ तं कोनेद्धा॥ परे पूर्णं परे पूर्ण
मिति॥ १८॥ इति छंदःसमा
प्ताहः॥ ७॥ ७॥ ७॥

च्चितइति॥ १७॥ अत्रानुक्तं गाथा॥
द्विकौ ग्लौ॥ मिश्रौ च॥ पृथं ग्लामि
श्राः॥ वसवस्त्विकाः॥ ल्वर्द्धं॥
सैकेग्॥ ज्ञातिलोमगुणं द्विलो
घं॥ ततो ग्ये कं जल्लात्॥ द्विरर्द्धं॥

KKSU LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1810
Dist. Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=22.10.20 14:52
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 14:55:51
,PAGES=21
,TYPE=STD
,NAME=S0004401
,Book Name=M-1810-CHHANDAS
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection